

zu erkennen geben über (acc.): गत्वा पुनरापामिनन्दन् AV. 19, 8, 3. प्रत्युप-
स्थितमूत्रस्तु मैथुनं यो ऽभिनन्दति Suçr. 2, 325, 4. (यः) तत्तत्प्राप्य प्रभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वष्टि Bhāg. 2, 57. जीवितं मरणं चैव नाभिनन्दन् च द्विषन्
MBh. 1, 4606. मरणं नाभिनन्देत् जीवितं नाभिनन्देत् M. 6, 45. लब्धं दृष्ट्वा
नाभ्यनन्दन्विपुलं वा धनागमम् । पुत्रं प्रथमज्ञं लब्ध्वा ज्ञानी नाभ्यनन्दत् ॥
R. 2, 48, 4. यथा च त्वाभिनन्दामि वध्यं तैमसंवृताम् । तथा भूयो ऽभिनन्दि-
ष्ये ज्ञातपुत्रा गुणान्विताम् ॥ MBh. 1, 7358. R. 3, 68, 26. 5, 23, 10. Çāk. 106,
4. तत्किमिदानीमात्मानं पूर्णमनोरथं नाभिनन्दामि 3, v. 1. Buāg. P. 4, 18,
41. 3, 20, 19. 25, 12. 5, 14, 45. नाभ्यनन्दत् तान् (पुत्रान्) MBh. 1, 3710. य-
थोर्जन्मन्यदा विश्वमभ्यनन्दत्सुनिर्वृतम् sich freute Buāg. P. 4, 1, 52. देवकृ-
ता वज्रबुद्धयो विनश्यति स्वल्पाधियो ऽपि विधिरक्षिता अभिनन्दति Pañ-
kā. 246, 7. pass.: भूभुजो ऽभ्यस्तलोभस्य श्रोः कैश्चिन्नाभिनन्द्यते Rāga-
Tār. 5, 187. सानन्दमभिनन्दितविक्रमः । राजपुत्र्या Vid. 273. — 3) Ver-
langen haben nach: एतच्छ्रेयो ये ऽभिनन्दति Muṇḍ. Up. 1, 2, 7. ग्रामे गृहे
वा यद्व्यं पारक्यं विज्ञेन स्थितम् । नाभिनन्दति नित्यं ते नराः स्वर्गगामि-
नः ॥ MBh. 13, 6655. — 4) Jmd freudig begrüßen, willkommen heißen: ततो
ऽभ्यगच्छत्सहसा मन्दपला ऽपि — अथ ते सर्व एवैनं नाभ्यनन्देस्तदा सुताः ॥
MBh. 1, 8448. 13, 1499. Arā. 1, 9. N. 3, 32. R. 1, 9, 44. प्रविशतमयोद्यायो न
कश्चिदभिनन्दति 2, 59, 13. Ragh. 3, 68. 7, 66. 68. Çāk. 71, 13. 106, 8. Kathās.
15, 130. 16, 4. Vid. 329. Pañkā. 57, 18. Amar. 39. med. MBh. 3, 1865. 3019. 13,
3581. R. 2, 54, 18. R. Gorra. 1, 52, 8. Buāg. P. 4, 25, 32. 6, 7, 7. pass.: पु-
रंदरश्रीः पुरुनृपताकं प्रविश्य पैरिभिनन्द्यमानः Ragh. 2, 74. Rāga-Tār.
3, 115. Vid. 146. शत्रिकपुत्राकृताचार्यराशिर्भिर्भिनन्दितः Jāg. 1, 331. स-
र्वाभिनन्दिता Kathās. 18, 84. Vid. 259. ad Çāk. 191. sich verabschieden
bei (acc.): आशीर्भिश्चाभिनन्द्यैताज्जगुर्नगरमेव हि MBh. 1, 5751. West.
stellt dieses Beispiel zum caus. Mit n Jmd unfreundlich empfangen,
zurückstossen: न च सो ऽभ्यनन्दत् MBh. 14, 134. Buāg. P. 4, 8, 9. act.
27, 28. तेनाप्यभिनन्दिता Ragh. 12, 35. — 5) Jmd beloben, Jmd seine
Zufriedenheit zu erkennen geben: अचित्पुं शीलगुप्तानां चारित्रं कुलोपा-
यिताम् । इति चाभिनन्दन्नुस्तामुपकोशो सभासदः ॥ Kathās. 4, 83. तदुद्धा सा-
धो तामभ्यनन्दताम् 86. गान्धर्वणा विवाहेन बह्वो राजर्षिकन्यकाः । श्रूयते
परिणीतास्ताः पितृभिश्चाभिनन्दिताः ॥ Çāk. 71. — 6) Etwas gern anneh-
men, sich einverstanden erklären mit; mit n zurückweisen, verschmä-
hen, nichts wissen wollen von: यदप्यो ऽभिनन्दतो ऽभ्यवयति Pañkā.
Br. 5, 9, 3. ततोयं नाभ्यनन्दत् MBh. 14, 1605. 2731. R. 2, 70, 24. तां
पूजां नाभ्यनन्दत्सः MBh. 5, 7505. 1, 3672. नाभ्यनन्दद्वयो धातुः 2, 1988. 3,
2287. 2288. 17, 17. Sund. 3, 12. R. Gorra. 2, 71, 20. 3, 44, 11. Çāk. 24, 1.
Hit. IV, 4. Buāg. P. 1, 10, 31. Märk. P. 14, 63. नाभिनन्दे नृपते प्रेषमेतम्
MBh. 2, 1989. अभिनन्दस्व गच्छेयम् willige ein, dass ich gehe R. 4, 10, 33.
अभिनन्दति Kathās. 4, 17. Vid. 232. 274. सम्यक्प्रणिहितं चार्थं पृष्टः स-
न्नाभिनन्दति giebt nicht zu, räumt nicht ein M. 8, 54. — Vgl. अभिनन्द
fig. — caus. erfreuen: मातरं चाभिनन्द्य R. 2, 107, 10.

— प्रत्यभि Jmds Gruss erwidern, mit dem acc. der Person: अभिवा-
द्य — विप्राश्च तैश्च प्रत्यभिनन्दितः MBh. 13, 7721. willkommen heißen
Çāk. Ch. 108, 1 (die andere Recension hat अभिनन्द्य).

— समभि Jmd beglückwünschen: समभिनन्दितो मन्त्रिभिः Kathās. 21, 148.

— आ sich freuen Git. 11, 10. आनन्दितारस्त्वो दृष्ट्वा Bhātt. 22, 14. (आ-
नन्दति Draup. 7, 7 ist eine falsche Lesart.) — caus. erfreuen, beseligen

Taitt. Up. 2, 7. (दाष्टः) यथाशास्त्रं प्रयुक्तः सन्सदेवासुरमानवम् । जगदानन्द-
येत्सर्वमन्यथा तत्प्रकोपयेत् ॥ Jāg. 1, 355. Çāk. Ch. 157, 4. Vid. 332. P.
5, 4, 63. Sch. Bhātt. 15, 23. 21, 12. आनन्दित Hariv. 2448. Amar. 23, 54.
— med. sich vergnügen (mit einem Weibe) Pañkop. 4, 2. — Vgl. आ-
नन्द u. s. w.

— परि caus. hoch erfreuen: कयाभिः परिनन्द्य तान् MBh. 15, 522.

— प्रति 1) Jmd freudig begrüßen, gern empfangen, Jmd seinen Gruss
(auch beim Abschied), Gegengruss entbieten, an Jmd freundliche Worte
richten, Jmd seine Zufriedenheit, Gewogenheit, Ergebenheit an den Tag le-
gen: यो देवा प्रतिनन्दति रात्रिं धेनुमुपायतोम् AV. 3, 10, 2. कृद्धिः प्रजाः प्र-
ति नन्दति सर्वाः 9, 1, 1. Kath. 37, 1. पुरस्ताद्वात्तं सर्वाः प्रजाः प्रतिनन्दति
TBr. 2, 3, 9, 5. 7, 9, 4. Çāt. Br. 12, 9, 3, 7. यथावयः कुर्वन्सर्वान्प्रतिनन्दति पाण्ड-
वाः MBh. 5, 1806. R. 2, 81, 15 (Gorra. 82, 14). Ragh. 1, 57. अस्मान्कृत्वा प्रदत्ति-
णम् । प्रतिनन्द्य तत्राशीर्भिर्निर्वृतं यथागृहम् MBh. 1, 5749. प्रजाः सर्वाः
प्रतिनन्द्य विसर्जयेत् M. 7, 146. MBh. 4, 2163. R. Gorra. 2, 13, 22. 4, 4, 8. रावणं
जयशब्देन प्रतिनन्द्य विनिर्गता 6, 3, 15. Buāg. P. 3, 16, 1. 21, 48. नदति
परुषं श्वेनाः शिवाः क्रोशन्ति दारुणम् । मृगेन्द्राः प्रतिनन्दति (प्रतिनदति
wäre gegen das Metrum) MBh. 12, 5776. स एव हि यदा तुष्टो वचसा प्र-
तिनन्दति 13, 426. आदित्यो वरुणः u. s. w. प्रतिनन्दति भूमिदम् 3150. स्तु-
वंश्च प्रतिनन्दश्च 7661. प्रतिनन्द्य शिवेन तम् 7, 756. Buāg. P. 4, 9, 18. 6, 4.
3. med. MBh. 3, 2999. 5, 7340. 16, 132. R. 1, 34, 53. pass.: वधूर्विधात्रा
प्रतिनन्द्यते स्म कल्याणि वीरप्रसवा भवेति Kumāras. 7, 87. प्रतिनन्दित
MBh. 5, 7100. 14, 1531. 2601. शिवेन प्रतिनन्दिताः 15, 1001. पित्राप्रति-
नन्दिता zurückgestossen Buāg. P. 4, 4, 8. — 2) Etwas gern annehmen,
mit Dank entgegennehmen; eine Rede, einen Rath annehmen; mit n
nichts wissen wollen von Etwas: पूजयेदशनं नित्यमद्याच्चैतदकुत्सयन् ।
दृष्ट्वा कृष्येतप्रसीदेच्च प्रतिनन्देच्च सर्वशः ॥ M. 2, 54. न चेदेकैको राज-
ह्योकात्रः प्रतिनन्दति MBh. 1, 3673. प्रतिनन्द्य स तो पूजाम् 7253. आसने
सलिलं पाद्यं प्रतिनन्दामि ते 14, 230. प्रतिनन्द्य कयाम् R. 1, 37, 1. प्रतिन-
न्दाम ते वाक्यं सर्वं चैव MBh. 4, 1137. 1143. 3, 2278. 2279. Buāg. P. 1, 7,
49. 3, 29, 6. 4, 20, 34. 6, 14, 8. — caus. erfreuen: प्रतिनन्द्य माम् MBh. 3,
16444. 5, 4753. Kām. Nitis. 8, 87.

— संप्रति Jmd freudig begrüßen, willkommen heißen: ताभ्यां संप्र-
तिनन्दितः MBh. 10, 475.

— वि sich freuen: सा तत्र पूज्यमाना वै दमयन्ती व्यनन्दत् MBh. 3, 2607.

नन्द (von नन्द) oxyt. P. 6, 2, 14, Sch. 1) m. a) Lust Çābdar. im ÇKDr.
VS. 20, 9. AV. 10, 2, 9. — b) eine Art Flöte Saṃgītad. im ÇKDr. — c)
N. einer der beiden Trommeln des Juddhishthira MBh. 7, 1032. —
d) N. eines der 9 Schätze des Kuvera Taitt. 1, 1, 79. Med. d. 6, 7. —
e) Bein. Vishṇu's MBh. 13, 7005. — f) N. pr. eines Wesens im Gefol-
ge von Skanda MBh. 9, 2566. 2567. — g) N. pr. einer buddh. Gottheit
Lalit. ed. Calc. 4, 15. Foucaux und eine andere Stelle der Calc. Ausg.
haben statt dessen नन्दन. — h) N. pr. eines Nāga (vgl. नन्दक) MBh. 5,
3628. Burn. Intr. 184. Lot. de la b. 1. 3. Schiefner, Lebensb. 271 (41).
eines Nāgarāja Vjūtp. 85. — i) N. pr. eines Mannes im Gefolge des
Dakṣha Buāg. P. 4, 7, 25. — k) N. pr. eines Sohnes des Königs Dhṛ-
tarāṣṭra (vgl. नन्दक) MBh. 1, 2731. 4544. 8, 2446. — l) N. pr. eines
Bruders des Çākjamuni (vgl. नन्दक) Vjūtp. 92. LIA. II, Anh. II. Schief-